

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)

ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में भारत से प्रवास के कारण।

डा० अमित कुमार सैनी

पद— सहायक आचार्य

कार्यरत— सन्तोष कुमार महाविद्यालय, कासिमपुर, हरदोई

ई-मेल— sainy.amit@gmail.com

शोध सारांश— मानव एक चलनशीलप्राणी है, जो कि अपने आरम्भिक काल से ही एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास करता आ रहा है, कभी उसने अपने पेट की भूख मिटाने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास किया था। परन्तु जैसे-2 उसका मानसिक विकास होता गया उसके प्रवास के कारण भी अलग-2 होते गये। भारत जहाँ पर सनातन धर्म और संस्कृति को मानने वाले व्यक्ति निवास कर रहे थे, उनकी धार्मिक मान्यता के अनुसार समुद्र पार करने का अर्थ है— जाति, धर्म और देश से बहिष्कृत हो जाना। ब्रिटिशों ने भारत को अपनी औपनिवेशिक बस्ती बनाया, और भारतीयों को श्रमिकों के रूप में अपनी अन्य औपनिवेशिक गन्ना कालोनियों में प्रवास कराया जिसमें मॉरीशस, फिजी, गुयाना, दक्षिण अफ्रीका, सूरीनाम, प्रमुख हैं। भारतीय जो कि खूब जानते थे कि यदि हम समुद्र पार गये तो जाति और धर्म से बहिष्कृत कर दिए जायेंगे, परन्तु फिर भी बहुत से भारतीय समुद्र पार करके गये, आखिर क्यों? उस समय समुद्र पार करके जाने का कोई एक कारण नहीं उत्तरदायी था, उसके बहुत से कारण थे जैसे— ईस्ट इंडिया कम्पनी और ब्रिटिशों की नीतियाँ, भारतीयों की जाति तथा सामाजिक व्यवस्था, भारतीयों की आर्थिक स्थिति, भारत के अकाल, भारत में 1857 ई० का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, पश्चिम में हुई औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप भारतीय हस्तशिल्प और लघु उद्योग धंधों का नष्ट हो जाना, ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा भू-राजस्व का अधिक बढ़ाया जाना इत्यादि कारण रहे, जिसके परिणामस्वरूप भारतीयों ने समुद्र पार कई देशों में प्रवास किया और आरम्भ में विभिन्न प्रकार की कई यातनाएँ झेलीं।

की-वर्ड— भारत, प्रवास, ब्रिटिश,

शोध-पत्र— मानव एक चलनशीलप्राणी है, जो कि अपने आरम्भिक काल से ही एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास करता आ रहा है, मानव ने जब आरम्भ में पृथ्वी पर कदम रखा तब वह अकेला था और उसे अपने आप को जीवित रखने के लिए भोजन की आवश्यकता पड़ी जिस कारण वह अपने भोजन की तलाश में इधर से उधर भटकता रहा। कुछ समय के पश्चात उसने पशुओं को पालना आरम्भ किया, जिस कारण उसे अब अपना और अपने पशुओं का पेट पालने के लिए भोजन की आवश्यकता पड़ी, धीरे-2 जब वह खेती करने लगा तो वह खेती के लिए अच्छी भूमि की तलाश में इधर-उधर भटकता रहा, और इस प्रकार के कई कारणों से वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकता रहा, वर्तमान की शब्दावली के अनुसार मानव एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास करता रहा। मानव का जैसे-2 मानसिक विकास होता गया उसी प्रकार से उसके प्रवास के कारण भी समय के अनुसार अलग-2 होते गये।

भारत जहाँ पर सनातन धर्म और संस्कृति को मानने वाले व्यक्ति निवास कर रहे थे, उनकी धार्मिक मान्यता के अनुसार समुद्र पार करने का अर्थ है— जाति, धर्म और देश से बहिष्कृत हो जाना। ब्रिटिशों ने भारत को अपनी औपनिवेशिक बस्ती बनाया, और भारतीयों को श्रमिकों के रूप में अपनी अन्य औपनिवेशिक

गन्ना कालोनियों में प्रवास कराया, ब्रिटिशों ने भारतीयों को पहली बार अनुबन्धित श्रमिक के तौर पर प्रवास कराया, जिसमें वह भारतीयों से पाँच वर्ष का करार कराते थे और अपनी अन्य औपनिवेशिक गन्ना कालोनियों में ले जाकर कृषि कार्य कराते थे, इस करार में वह सभी श्रमिकों को आने-जाने, खाने-पीने और रहने की व्यवस्था निःशुल्क रखते थे। यह करार जितना भारतीयों को आसान लगता था परन्तु उससे कई गुना कठिन था जिसका पता तभी लग पाता जब वह प्रवास करके दूसरी कालोनी में पहुँचते थे। प्रवासी श्रमिकों की पीड़ाओं के किस्सों से बहुत सी किताबें भरी पड़ी हैं। ब्रिटिश औपनिवेशिक भारत में भारतीयों ने श्रमिकों के रूप में अथवा व्यापार करने के लिए जिन देशों में प्रवास किया उनमें मॉरीशस, फिजी, गुयाना, दक्षिण अफ्रीका, सूरीनाम, सेसेल्स, रीयूनियन, मेडागास्कर, तंजानिया, युगांडा, कीनिया, त्रिनिडाड एण्ड टोबैगो, सीलोन, वर्मा, मलेशिया, सिंगापुर, थाइलैण्ड, इंडोनेशिया, फिलीपींस, हांगकांग, प्रमुख हैं। भारतीय जो कि खूब जानते थे कि यदि हम समुद्र पार गये तो जाति और धर्म से बहिष्कृत कर दिए जायेंगे, परन्तु फिर भी बहुत से भारतीय आरम्भ में समुद्र पार करके विभिन्न देशों में गये, आखिर क्यों? भारत से सबसे पहली बार 1834 ई० में भारतीयों का प्रवास हुआ, जिसमें 36 व्यक्तियों को श्रमिक के अनुबन्ध के रूप में मॉरीशस भेजा गया था। उस समय समुद्र पार करके जाने का कोई एक कारण नहीं उत्तरदायी था, उसके बहुत से कारण थे। जिसमें ईस्ट इंडिया कम्पनी और ब्रिटिश सरकार की नीतियाँ, भारतीयों में जाति तथा सामाजिक व्यवस्था, भारतीयों की खराब आर्थिक स्थिति, भारत के अकाल, भारत में 1857 ई० का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, औद्योगिक क्रांति प्रमुख कारण थे।

1—ईस्ट इंडिया कम्पनी और ब्रिटिश सरकार की नीतियाँ :— ईस्ट इंडिया कम्पनी जिसने 18वीं सदी के मध्य तक भारत के अधिकतर हिस्से और व्यापार पर कब्जा कर लिया था, और कम्पनी का मुख्य उद्देश्य यही था कि अधिक से अधिक धन का दोहन करना। भारत गाँवों में निवास करता था और गाँवों की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि और लघु उद्योग थे, ईस्ट इंडिया कम्पनी ने सबसे पहले इसी को नुकसान पहुँचाया, और देश की आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की जड़ों को हिला दिया। इसी उद्देश्य से उसने यहाँ पर वह नीतियाँ लागू की जो उसका खजाना भर सके। हाउन्स ऑफ कामन्स के 1784 के प्रस्ताव के अनुसार— संसदीय जाँच के नतीजों से पता चला है कि ईस्ट इंडिया कम्पनी अपने उद्देश्यों में चाहे वे राजनैतिक हों या व्यापारिक, पूरी तरह से भ्रष्ट और विकृत पाई गई, उसने हर क्षेत्र में तीव्रतर विरोध बढ़ाते हुए, लूटमार के मकसद की पूर्ति के लिए राजकीय अधिकार पत्र द्वारा प्रदत्त युद्ध और शांति के अधिकारों का दुरुपयोग किया है। शांति संबंधी लगभग सभी संधियों के जरिए उन्होंने जनता के विश्वास को अनेक बार आघात पहुँचाया है। जो देश एक समय अपार समृद्ध थे उन्हें इस कम्पनी ने असमर्थता, अपकर्ष और जनशून्यता की स्थिति में पहुँचा दिया है¹। ईस्ट इंडिया कम्पनी ने अधिक धन कमाने के लिए भू-राजस्व को बहुत अधिक बढ़ा दिया था तथा अकाल एवं सूखे की स्थितियों में भी किसानों से जबरन वसूला जिससे बहुत से किसानों ने अपनी जमीन, सम्पत्ति बेचकर भू-राजस्व दिया था जिस कारण बहुत से किसान बेघर हो गये थे, इसका असर यह हुआ कि बहुत से किसानों ने कृषि कार्य करना बन्द कर दिया और मजदूरी करने के लिए इधर-उधर भटकने लगे। किसानों की बढ़ती हुई गरीबी के मुख्य कारण था भूमिकर, कम्पनी के द्वारा जो भूमिकर निश्चित किया गया था उसकी धनराशि इतनी थी कि उसके दुष्परिणाम बाद के वर्षों में सामने आए। 1857–58 में जब ब्रिटिश राज्य ने ईस्ट इंडिया कम्पनी से भारत का शासन सूत्र अपने हाथों में लिया, उस वक्त सारे भारत का भूमिकर 15.3 मिलियन पाँड था, बाद में यह राशि बढ़ती ही गई। 1900–01 में यह राशि 17.5 मिलियन पाँड थी, 1911–12 में 20 मिलियन और 1936–37 में 23.9 मिलियन²। भारतीय किसानों ने सब कुछ खो दिया था यहां तक कि हल, बैल और बीज भी, जमीन खोकर अब वे भूमिहीन खेतिहर मजदूर बन गये थे, और ऐसे लोगों

की संख्या बढ़ती गई, इन लोगों के समक्ष भारत से बाहर जाकर मजदूरी करने के सिवाय और कुछ नहीं बचा था। हॉलकि कुछ व्यक्ति जिनके पास कुछ धन था उन्होंने भारत से बाहर जाकर विदेशों में अपना व्यापार भी किया।

2—भारतीयों में जाति तथा सामाजिक व्यवस्था— भारतीय जो कि अनेक जातियों और विभिन्न धर्मों में बंटे हुए थे, भारत की सामाजिक व्यवस्था कुछ इस प्रकार की थी कि एक धर्म दूसरे धर्म को और एक जाति दूसरी जाति को हेय दृष्टि से देखा करती थी, समाज विभिन्न वर्णों में बंटा हुआ था, जो जातियाँ अपने को उच्च वर्ण का मानती थी वह अपने से निम्न जातियों का सम्मान नहीं करती थी, भारत में निचले वर्ग के व्यक्ति जिनको समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता था उनका झुकाव भारत से बाहर प्रवास की ओर अधिक हुआ क्योंकि वे अपने को सामाजिक दृष्टि से ऊपर उठना चाहते थे और उन्हें समुद्र पार एक नया जीवन दिख रहा था, इसके अतिरिक्त उन्हें धन एवं नए समाज में सम्मान भी प्राप्त होता दिख रहा था। आरम्भ में श्रमिकों की भर्ती एजेंटों के द्वारा की जाती थी और भर्ती करने वाले एजेंट भी उच्च जाति के व्यक्तियों को वरीयता के स्थान पर निचली जातियों के व्यक्तियों को वरीयता प्रदान करते थे। वर्तमान की परिस्थितियों के अनुसार देखा जाए तो उच्च जातियों के व्यक्तियों के सामने कम समस्याएँ दिख रही थी, उच्च वर्ग के व्यक्तियों में केवल वही समुद्र पार उपनिवेशों में कृषि कार्य करने को तैयार होता था जिसके सम्मुख कठिन आर्थिक समस्या होती थी, एक दूसरा कारण यह भी माना जा सकता है कि उच्च वर्ग के व्यक्ति खेती-बाड़ी में मजदूरी करना अपनी शान के खिलाफ मानते थे, इसके बावजूद भी उच्च वर्ग के व्यक्तियों ने अधिक संख्या में किसी न किसी प्रकार आरम्भ में समुद्र पार ब्रिटिश उपनिवेशों में मजदूरी करने के लिए प्रवास किया था।

3—भारतीयों की खराब आर्थिक स्थिति—ब्रिटिशों की नीतियों ने भारतीयों की आर्थिक स्थिति को एकदम तहस-नहस कर दिया था। जिस कारण भारत में जिन व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति काफी खराब थी उन लोगों ने अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए भारत से बाहर अन्य देशों में प्रवास को चुना था, भारतीयों को जिस प्रकार से समझाया और बताया जाता था कि वहाँ पर तुमको कितना धन मिलेगा उससे वह लोग वह यह जानते थे कि वहाँ पर अधिक से अधिक धन की बचत कर लेंगे क्योंकि भारत से बाहर अन्य ब्रिटिश कालोनियों तक आना एवं जाना निःशुल्क में था और इसके अतिरिक्त पाँच वर्ष तक कालोनी में रहने खाने-पीने व कपड़ों की भी निःशुल्क में व्यवस्था थी अतः बहुत से निर्धन भारतीय व्यक्तियों ने सोचा कि हम भारत से वहाँ पर बेहतर स्थिति में रहेंगे और धन की बचत भी होगी। भारतीय लोग इस बात को बखूबी समझ चुके थे कि भारत में ब्रिटिशों की जो नीतियाँ चल रही हैं उन नीतियों के फलस्वरूप वह न तो कोई उद्योग-धन्धे कर पाएँगे और न तो कृषि कार्य कर पायेंगे। औसत भारतीय की आय महज इतनी है कि जिसमें या तो हर तीन व्यक्तियों में से दो को खाना मिल सके या उन सब को आवश्यक तीन वक्त के भोजन के स्थान पर दो वक्त का भोजन दिया जा सके बशर्ते वे इस बात पर सहमत हों कि उन्हें बिना कोई कपड़ा पहने रहना है, पूरा वर्ष घर के बाहर आसमान के नीचे बिताना है, किसी प्रकार का आमोद-प्रमोद या मनोरंजन नहीं करना है। और सबसे घटिया, सबसे रद्दी और सबसे कम पोष्टिक भोजन के अलावा और किसी चीज की माँग नहीं करनी है³।

भारत में ही एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास और भारत से बाहर दूसरे देशों में प्रवास का प्रमुख कारण था कि सम्पूर्ण जनसंख्या को भोजन पूर्ण नहीं हो रहा था⁴। सरोजनी नायडू ने नेटाल की यात्रा के दौरान एक भोज के अन्त में कहा था कि— यहाँ के गरीब प्रवासी किसानों और मजदूरों को खाने-पीने की तकलीफ तो जरूर है, पर हमारे देश (भारत) में तो करोड़ों आदमियों को ऐसा खाना भी मयस्सर (उपलब्ध) नहीं होता⁵।

1880 में ही अकाल आयोग ने कहा था— जिन लोगों के पास जमीनें बची हैं उनका एक तिहाई हिस्सा गंभीर और विकट रूप से कर्ज में डूबा हुआ है और कम से कम इतनी ही संख्या में अन्य लोग कर्ज के बोझ में लदे हैं हालांकि उनमें इस कर्ज से उबरने की क्षमता भी है⁶। इसके अतिरिक्त वे हिन्दू—मुस्लिम भारतीय जो राजनैतिक समस्याओं से ग्रस्त थे उन्होंने समुद्र पार उपनिवेशों में कार्य करने को वरीयता प्रदान की।

4—भारत के अकाल— भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन काल में लगभग बारह अकाल और चार सूखे पड़े जबकि क्राउन के शासनकाल में दस अकाल और अनेक बार सूखा पड़ा जिसमें लाखों व्यक्ति मर गये। हमें बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि भारत में ब्रिटिश शासन के 130 वर्षों के अन्तराल में बाइस अकाल पड़े। सन् 1867—1877 का महान अकाल इस ओर संकेत करता है कि हमारे कृषि श्रमिकों का असमान्य भारी संख्या में सीलोन में पलायन हुआ था⁷। संसद सदस्य विलियम फुल्लर्टन ने कहा था— बीते दिनों में बंगाल के गाँव विभिन्न जातियों के लोगों से भरे—पूरे थे और पूर्व में वाणिज्य, धन संपदा तथा उद्योग के भंडार थे लेकिन हमारे कुषासन ने 20 वर्षों की अल्पावधि में ही इन गाँवों के अनेक हिस्सों को बंजर का रूप दे दिया है। खेतों में अब खेती नहीं की जाती है, बड़े—बड़े इलाकों में अब झाड़ियाँ उगी पड़ी हैं, किसान लुट चुके हैं, औद्योगिक निर्माताओं का दमन किया जा चुका है, बार—बार अकाल पड़े हैं और फलस्वरूप जनसंख्या का ह्रास हुआ है⁸। 1860 ई० और 1861 ई० में जब उत्तर—पश्चिमी प्रान्त में अकाल पड़ा तब प्रवास करने वालों की संख्या क्रमशः 17,899 एवं 22,600 थी, जब 1865—66 ई० में उड़ीसा और बिहार में अकाल पड़ा उस दौरान प्रवासियों की संख्या 19,963 थी, और 1873—74 एवं 1874—75 के दौरान बिहार एवं अवध में हाल में ही पड़े अकाल के दबाव के कारण उत्तर—पश्चिमी प्रान्त के पूर्वी जिलों में काफी दबाव था जिस कारण प्रवास करने वालों की संख्या क्रमशः 24,571 एवं 20,109 हो गई थी⁹।

5—भारत में 1857 ई० का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम— 1858 ई० से 1859 ई० के मध्य भारतीयों श्रमिकों का उत्प्रवास सबसे अधिक संख्या में हुआ था क्योंकि 1857 ई० में भारतीयों द्वारा अंग्रेजों से मुक्त होने के प्रयास में जो विद्रोह हुआ था जिसको ब्रिटिशों ने सफलतापूर्वक दमन कर लिया था और उसके बाद भारत पर ईस्ट इंडिया कम्पनी से शासन क्राउन के हाथों में चला गया था। ब्रिटिश शासन के विरोध में जिन लोगों ने सहयोग किया था उन को ब्रिटिश सरकार भिन्न—2 प्रकार की यातनाएँ दे रही थी। जिस कारण भारतीयों पर काफी दबाव था इसके अतिरिक्त भारतीयों का औपनिवेशिक कालोनियों की ओर खिंचाव भी था, इन कारणों की वजह से इस दौरान सबसे अधिक संख्या में भारत से प्रवास हुआ था। सन् 1858 ई० और 1859 ई० में प्रवास सबसे अधिक संख्या में पहुँच गया था। हजारों भारतीय जिन्होंने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध 1857 ई० में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विरोध किया था उन्होंने अंग्रेजों के उत्पीड़न से बचने के लिये कैरेबियन भूमि पर प्रवास किया¹⁰। कलकत्ता से सबसे अधिक संख्या में प्रवास 1858 ई० में 27,779 और अगले वर्ष 1859 ई० में जब 24,337 लोगों ने हुगली को छोड़ा¹¹। 1855—65 ई० के मध्य कलकत्ता से 143,249 मद्रास से 75,082 मुम्बई से 15,421 कुल 233,752 लोगों ने उत्प्रवास किया था¹²।

भारत में 1857 ई० के विद्रोह के बाद प्रवासी भारतीयों की संख्या¹³

सन्	प्रवासी भारतीयों की संख्या
1857	12,555
1858	20,758
1859	45,025
1860	41,777

1861	21,872
1862	31,358
1863	12,490
1864	10,258
1865	21,545
1866	27,779
कुल	245,417

6-औद्योगिक क्रांति— ब्रिटिशों के भारत में आने से पहले भारत में हस्तशिल्प उद्योग काफी विकसित था परन्तु औद्योगिक क्रांति होने के फलस्वरूप हस्तशिल्प उद्योग बन्द हो गये थे क्योंकि ईस्ट इंडिया कम्पनी ने भारत के किसानों से कच्चा माल जबरन सस्ती दरों पर खरीदा और ब्रिटेन ले जाकर निर्मित करके उसे वापिस भारत में लाकर उँची दरों पर बेचा था। भारत के साथ सूती माल के व्यापार का इतिहास एक दुखद प्रसंग है। इससे पता चलता है कि जिस देश पर भारत आश्रित हो चुका था उसने भारत के साथ कैसा अन्याय किया.....यदि प्रतिरोधक कर और कानून नहीं होते तो पेजली और मेनचेस्टर की मिलें शुरू में ही बन्द हो जाती और भाफ की ताकत से भी उन्हें फिर चला पाना संभव नहीं होता। भारतीय निर्माण उद्योग की बलि चढ़ाकर ही ब्रिटिश उद्योगों की सृष्टि की गई। जिस तरह का प्रतिकार स्वाधीन रहने पर भारत कर सकता था, वैसा कोई आत्मरक्षात्मक कार्य वह नहीं कर सका। वह अजनबी लोगों की दया पर निर्भर था। ब्रिटेन में बने सामान पर कर नहीं लगता था, और वह सामान खरीदने को भारत बाध्य था। ब्रिटिश उद्योगपतियों ने राजनीतिक प्रभुता और अनीति की मदद से अपने भारतीय प्रतियोगियों को दबाए रखा और अन्ततोगत्वा उन्हें पूरी तरह समाप्त कर दिया, यद्यपि बराबर की लड़ाई वे टिक नहीं पाते¹⁴।

बंगाल का हथकरघा उद्योग जिससे लाखों परिवारों की रोजी-रोटी चलती थी एकदम नष्ट हो गया था। बंगाल के 1793 ई० के एक्ट जैसे कम्पनी द्वारा बनाए गए विधान और उसके सौदागरों और एजेंटों द्वारा अपनाए गए दमनात्मक तरीकों का कारीगरों की जिंदगी और उसके कार्य पर घातक प्रभाव पड़ा। जुलाहों के हजारों परिवारों ने अपना पेशा छोड़ना शुरू किया। कुछ कारीगरों ने अपने पुराने रोजगार को प्राथमिकता प्रदान की औ उस रोजगार से अपना जीवन-यापन चलाने की सोची परन्तु इन लोगों को अपने सामान की खपत के लिए लगातार मंडी पर ही आश्रित रहना पड़ा, जिसका प्रभाव यह पड़ा कि वे सेठियों और सौदागरों के सिकंजे में कसते चले गये और उनका आर्थिक शोषण होता रहा और इस प्रकार इनकी भी संख्या कुछ समय पश्चात शून्य हो गई। बोल्ड्स ने कहा है— जुलाहों के सात सौ से भी अधिक परिवारों ने जंगलबाड़ी के इर्द-गिर्द के इलाकों में दमनात्मक कार्रवाइयों के कारण अपना देश और पेशा छोड़ दिया¹⁵।

लगातार गरीबी बढ़ती जा रही थी अत्यधिक गरीबी बढ़ने के कारण पुश्तैनी कारीगरों ने कारीगरी छोड़ दी, और शहरों की ओर पलायन कर गये जहाँ पर जिनको व्यक्तियों को कल-कारखानों में काम मिल गया वे वहाँ पर मजदूरी करने लगे और जिनको काम नहीं मिला वह भीख मांगने के कगार पर आ गए। आधुनिक उद्योगों का उस स्तर तक विकास नहीं हो पाया था कि प्रत्येक व्यक्ति को कारखानों में काम मिल पाता। सस्ते यूरोपीय सामानों और बर्तनों के आयात ने तथा भारत में पश्चिमी ढंग की अनेक फैक्ट्रियों की स्थापना ने कमोवेश अनेक ग्रामीण उद्योग धंधों को बिनष्ट किया। खेती में हुई पैदावार की उँची कीमतों को देखकर गांवों के कई दस्तकाकारों ने भी अपनी खानदानी कारीगरी छोड़कर खेती का काम शुरू किया है। पुरानी ग्रामीण संरचना का जिस प्रकार विघटन हो रहा है वह अलग-2 हिस्सों में उल्लेखनीय रूप से कम या अधिक है। अपेक्षाकृत विकसित सूबों में यह परिवर्तन सर्वाधिक उल्लेखनीय है¹⁶।

उद्योग धंधों पर निर्भर आबादी(प्रतिशत में)¹⁷

सन्	प्रतिशत
1911	5.5
1921	4.9
1931	4.3
1941	4.2

जिस समय औद्योगिक क्रांति हुई उस समय तक पाश्चात्य देशों में दास प्रथा का समापन हो चुका था, और उद्योगों को चलाने के लिए मजदूरों की आवश्यकता पड़ी। ब्रिटिशों ने चीन, अफ्रीका के लोगों को पहले श्रमिकों के रूप में चुना था परन्तु वह लोग कार्य करने में सक्षम नहीं थे, और जब उनकी नजर भारत पर पड़ी और उन्होंने भारत की स्थिति को देखा कि भारतीय बहुत ही जल्दी बहकावे में आ जाते हैं और परिश्रमी हैं, इन सब का फायदा उठाकर उन्होंने भारतीयों ने पहली बार अनुबन्धित श्रमिक के तौर पर प्रवास किया था। आरम्भ में भारतीयों ने प्रवास को और प्रवासियों को हेय दृष्टि से देखा परन्तु जैसे-2 समय परिवर्तित होता गया भारतीयों का प्रवास के प्रति मानसिक परिवर्तन होता गया और अब तो वर्तमान में प्रवास ने एक प्रचलन का रूप धारण कर लिया।

¹ दत्त, रजनी पाम, अनुवाद— आनंदस्वरूप वर्मा, आज का भारत, मैकमिलन इंडिया, दिल्ली, 1977, पृ0सं0 127

² देसाई, आर0एस0, भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक प्रष्ठभूमि, मैकमिलन, दिल्ली, पृ0सं0 45, द्वारा उद्धृत, दत्त, आर0पी0, इंडिया टुडे, 1940, पृ0सं0 205

³ शाह और खम्माता, दि वेल ऐण्ड टैक्सबेल कैपेसिटी आफ इंडिया, 1924, पृ0सं0 253, दत्त, रजनी पाम, उपरोक्त पृ0सं0 55–56

⁴ सैनी, अमित कुमार, गिरिमिटिआ श्रमिक प्रणाली का उन्मूलन: ब्रिटिश अधिकारियों एवं गैर अधिकारियों का योगदान 1890–1920, (प्रकाशित शोध ग्रन्थ) बुक रिवर्स, लखनऊ, 2022, पृ0सं0 40, फाइल नं0, 16/दिसम्बर/1893, रेवेन्यू डिपार्टमेंट, इकोनॉमिक कण्डीषन्स आफ एग्रीकल्चर एण्ड लेबोरिंग क्लास इन इंडिया, पृ0सं0 282

⁵ सन्यासी, भवानी दयाल, प्रवासी की आत्मकथा, सस्ता साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1947, पृ0सं0 271–272, सैनी, अमित कुमार, उपरोक्त, पृ0सं0 40

⁶ दत्त, रजनी पाम, उपरोक्त, पृ0सं0 263

⁷ सुन्दरम, लंका, इंडियन ओवरसीज, ए स्टडी इन इकोनॉमिक—सोसिओलोजी, जी0ए0 नेट्सन एण्ड कम्पनी, मद्रास, 1933, पृ0सं0 36

⁸ सन्यासी, भवानी दयाल, प्रवासी की आत्मकथा, सस्ता साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1947, पृ0सं0 58–59 सैनी, अमित कुमार, उपरोक्त, पृ0सं0 15

⁹ रिपोर्ट आफ दि कमेटी ऑन इमिग्रेशन फ्रॉम इंडिया टू दि क्राउन कालोनीज, पृष्ठ0सं0 10, टिंकर, ह्यू, ए न्यू सिस्टम ऑफ स्लेवरी, दि एक्सपोर्ट आफ इंडियन लेबर ओवरसीज, 1830–1920, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बाम्बे, 1974, पृ0सं0 119, सैनी, अमित कुमार, उपरोक्त, पृ0सं0 16

¹⁰ स्टीवन, वर्टोव्स, हिन्दू त्रिनिडाड, रिलीजन इथनिकिटी एण्ड सोसिओ इकोनॉमिक चेंज, मैकमिलन, लंदन, 1992 द्वारा उद्धृत हंगलूरतन लाल, (सम्पादक) इंडियन डाइस्पोरा इन दि कैरेबियन, हिस्ट्री, कल्चर एण्ड आइडेंटिटी, प्रीमिस बुक, न्यू दिल्ली, 2012 पृ0सं0 01

¹¹ सैनी, अमित कुमार, उपरोक्त, पृ0सं0 27, रिपोर्ट आफ दि कमेटी ऑन इमिग्रेशन फ्रॉम इंडिया टू दि क्राउन कालोनीज, पृ0सं0 10

¹² नोर्थुप, डेविड, इंडियन लेबर इन दि एज ऑफ इम्पीरिएलिज्म 1834–1922, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1995, अपेन्डिक्स ए–3

¹³ स्टेटिक्स रिलेटिंग टू इंडिया, पृ0सं0 34, table no. 37, Acc.gipe.ac.in (यह संख्या कलकत्ता, मद्रास एव बम्बई बन्दरगाह से, नेटाल, रीयूनियन, मॉरीषस, ब्रिटिश गुयाना और वेस्ट इंडीज जाने वालों की ही केवल है।), सैनी, अमित कुमार, उपरोक्त पृ0सं0 27

¹⁴ देसाई, आर0एस0, पूर्वोक्त, पृ0सं0 65–66, द्वारा उद्धृत, मिल, पृ0सं0 385

¹⁵ देसाई, आर0एस0, पूर्वोक्त, पृ0सं0 67, द्वारा उद्धृत, बोल्ट्स, विलियम, कंसिडरेशन आन इंडियन अफेयर्स, 1772

¹⁶ दत्त, रजनी पाम, पूर्वोक्त पृ0सं0 221

¹⁷ देसाई, आर0एस0, पूर्वोक्त, पृ0सं0 42 द्वारा उद्धृत, वाडिया, पी0ए0 ऐण्ड मर्चेन्ट, के0टी0, अवर इकोनॉमिक प्रॉब्लम, 1943



EARN YOUR MBA

WWW.IIMPS.IN



Accreditation & Ranking



UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

☎ 011-41005174

RESEARCH
GATEWAY

STOP PLAGIARISM



Arogyam Ayurveda
Holistic Healing through herbs



AROGYAM
ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

परिवर्तन

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD



BLUE

Calms your Child's
Mind & Body

YELLOW

Promotes Concentration,
Stimulates the Memory

PINK

Evokes Empathy,
makes your Child Calm

RED

Excites and energizes
your Child's body

GREEN

Improves Reading speed
and Comprehension

www.parivartan4u.com



परिवर्तन

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

ISSN – 2250 – 1959 (O) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

ISSN 2277 – 9809 (O) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSSH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE
ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM



**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMISI.COM



**JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS
AND ECONOMICS RESEARCH**

WWW.JLPER.COM

JLPE